पद ३६

(राग: भूप जिल्हा - ताल: धुमाळी) मायाधृत चरणारविंद। जय जय चिदानंद सुखकंद।।ध्रु.।। निर्गुण आणि सगुणाकृति दाविसि। विश्वरूप निजछंद।।१।। शेष सरस्वति महादेव परि। तव भजनीं मितमंद।।२।। ज्ञानरूपमार्तांड स्वरूपीं। अतितर घन आनंद।।३।।